



महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

(भा.कृ.अनु.प. - कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान कानपुर)

चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ.प्र.)-273165



समाचार – पत्रिका

अंक-03

मार्च, 2021

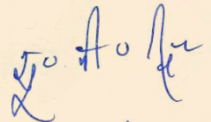
प्रो. उदय प्रताप सिंह
उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति
गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान
गोरखनाथ, गोरखपुर

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र
एक नजर में

संदेश

वर्तमान समय में कृषि उत्पादन लागत को कम करने एवं गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि कृषकों तक नवीनतम कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जाए। महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर इन नवीनतम तकनीकियों को निरंतर कृषकों तक पहुँचाने में तत्पर हैं जिससे कृषकों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक न्यूज लैटर का यह अंक केन्द्र द्वारा किए गए एवं किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ नवीनतम कृषि तकनीकियों का प्रसार गांव-गांव एवं घर-घर पहुँचेगा, जो सभी वर्ग के किसानों के लिए लाभप्रद होगा।


(उदय प्रताप सिंह)



कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना कृषि एवं संबंधित विषयों की नवीनतम तकनीकों के स्थानांतरण एवं प्रसार द्वारा जनपद के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान के नियंत्रण में गोरक्षपीठाधीश्वर पूजनीय महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा की गई। इस केन्द्र का शिलान्यास 23 अक्टूबर 2016 एवं उद्घाटन 2 मार्च 2019 को तत्कालीन केंद्रीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी के द्वारा किया गया। यह केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा वित्तपोषित है। यह केन्द्र गोरखनाथ की पवित्र धरती पर स्थापित होने की वजह से इस केंद्र का पूरा नाम महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र रखा गया। यह केन्द्र गोरखपुर जनपद से 35 किलोमीटर दूरी पर गोरखपुर – सोनौली मार्ग पर पीपीगंज रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूरी पर (अक्षांश 26.929971, देशांतर 83.240244) पीपीगंज – बढ़या चौक मार्ग पर स्थित है। कृषि विज्ञान केन्द्र के पास 20.56 हेक्टेअर का प्रक्षेत्र है जिस पर प्रमुख रूप से गेहूँ, धान, सरसो, चना, तिल, गन्ना, अरहर इत्यादि फसलों का बीज उत्पादन किया जाता है।

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

फसल/उद्यम का शीर्षक	प्रशिक्षण की सं.	लाभार्थी संख्या
क) कृषक एवं महिला कृषकों हेतु प्रशिक्षण	04	96

2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल/उद्यम का शीर्षक	क्षेत्रफल हे./ सं.	लाभार्थी संख्या
क) बरसीम हरा चारा	04	32
ख) चना (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन RVG 202)	10	25
ग) मसूर (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन IPL 316)	05	12
घ) सरसो (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन DRMRIJ 31, RH749)	46.66	115
ड) जौ (RD 2907)	4.0	10
च) सरसो (अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, सल्फर, DRMRIJ 31, RH749)	2	14
छ) चना (अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, बोरान, RVG 202)	2.5	10

3. प्रक्षेत्र परीक्षण

शीर्षक	संख्या लाभार्थी
क) भैस में दुग्ध उत्पादन में वृद्धि में बाई पास प्रोटीन फीड का मूल्यांकन	05
ख) मटर प्रजाति काशी नन्दिनी का 0.5 हेक्टेअर पर 5 किसानों के यहां चल रहा है	05
ग) मिर्च का प्रजाति काशी अनमोल का 0.5 हेक्टेर पर 5 किसानों के यहां चल रहा है	05
घ) चने पर फास्फोरस घोलक जीवाणु व राइजोबियम जैव उर्वरक के प्रभाव का मूल्यांकन 0.6 हे. में 3 किसानों के यहां चल रहा है	03
ड) गेहूँ प्रजाति करण वंदन (DBW 187) का मूल्यांकन	05

4. प्रसार गतिविधियां

शीर्षक गतिविधियां	संख्या	लाभार्थी
क) वैज्ञानिकों का कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण	20	41
ख) कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण	39	46
ग) मोबाइल सलाह	31	421
घ) समाचार पत्र प्रकाशन	21	सामूहिक
ड) अन्य कार्यक्रम	07	769

समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम

❖ समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत सरसों की फ़सल का 46.66 हे क्षेत्रफल में 115 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे सरसों की उन्नतशील प्रजाति का बीज गिरिराज (डीआरएमआर-आईजे 31) एवं आर.एच. 749 कृषको को दिया गया और साथ ही साथ इसके खेती के बारे में प्रशिक्षित किया गया. वर्तमान में फ़सल अच्छी चल रही है।



❖ समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत चना की फ़सल का 10 हे क्षेत्रफल में 25 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे चने की उन्नतशील प्रजाति RVG 202 का बीज कृषको को दिया गया और साथ ही साथ इसके खेती के बारे में प्रशिक्षित किया गया. वर्तमान में फ़सल अच्छी चल रही है।



❖ समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत मसूर की फ़सल का 05 हे क्षेत्रफल में 12 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे मसूर की उन्नतशील प्रजाति IPL 316 का बीज कृषको को प्रदर्शन हेतु वितरित किया गया, इसके साथ ही मसूर की उत्पादन तकनीक के बारे में प्रशिक्षित भी किया गया. वर्तमान में फ़सल अच्छी चल रही है।



अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम

❖ अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत डॉ. विवेक प्रताप सिंह वि.व.वि.-पशुपालन द्वारा 32 कृषकों के 4.0 हे क्षेत्रफल में बरसीम की मस्कावी प्रजाति का प्रदर्शन किया गया है इसकी औसत हरा चारा उत्पादन 900 से 1000 क्विंटल प्रति हे. है। यह बुआई के 40-45 दिनों के बाद कटाई योग्य हो जाती है।



❖ भा.कृ.अनु.प-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा आवंटित अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा जौ की फसल का 04 हे क्षेत्रफल में 10 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे जौ की उन्नतशील प्रजाति RD 2907 का बीज कृषको को प्रदर्शन हेतु वितरित किया गया, इसके साथ ही जौ की उत्पादन तकनीक के बारे में प्रशिक्षित भी किया गया. वर्तमान में कृषक प्रक्षेत्र पर फसल पक कर खड़ी है।



प्रक्षेत्र परीक्षण

❖ प्रक्षेत्र परीक्षण के अंतर्गत भैस के दुग्ध उत्पादन में बृद्धि हेतु बाई पास प्रोटीन फीड का मुल्यांकन 05 किसानो के 05 महिष वंशीय पशुओ पर किया जा रहा है



❖ दिनांक- 18/03/2021 को सरसों पर सल्फर का प्रभाव का प्रदर्शन डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय वि.व.वि.-मृदा विज्ञान द्वारा 07 कृषकों के 1.0 हे क्षेत्रफल में DRMRIJ 31 प्रजाति का किया गया। जिसमे सल्फर उर्वरक प्रयोग व कृषक पद्धति का सरसों पर प्रभाव तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया। आकड़े संकलित किये जा रहे है।



❖ दिनांक- 23/01/2021 को चने पर बोरोन का प्रभाव का प्रदर्शन डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय वि.व.वि.-मृदा विज्ञान द्वारा 04 कृषकों के 1.0 हे क्षेत्रफल में RVG 202 प्रजाति का किया गया। जिसमे बोरोन उर्वरक प्रयोग व कृषक पद्धति का चने पर प्रभाव तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया। इसी के साथ ही साथ फसल का आकलन किया गया है। आकड़े संकलित किये जा रहे है।



- ❖ केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान, श्री अवनीश कुमार सिंह, द्वारा गेहूँ की नयी प्रजाति करण वंदन (DBW 187) का मूल्यांकन 05 कृषको के प्रक्षेत्र पर 5000 वर्ग मीटर में मूल्यांकन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे प्रजाति की वृद्धि, विकास एवं उत्पादन क्षमता का परीक्षण किया जा रहा है । आकड़े संकलित किये जा रहे है ।



Mustafabad, Uttar Pradesh, India
 Unnamed Road, Mustafabad, Uttar Pradesh 273209, India
 Lat N 26° 48' 13.4532"
 Long E 83° 11' 2.9976"

प्रक्षेत्र भ्रमण

- ❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक 24-03-2021 को रानाडीह गाँव में दिनेश निषाद के प्रक्षेत्र पर लगे गोभी के फसल का निरीक्षण कर आवश्यक सुझाव दिया गया ।



- ❖ केंद्र के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा दिनांक- 20/03/2021 को चरगावा विकास खंड के गाँव परमेश्वरपुर किसानो के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया । इसी के साथ ही साथ उनकी फसल का आकलन किया गया एवं फसल सम्बन्धी आवश्यक जानकारी दी गयी



- ❖ दिनांक-15/03/2021 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र व हिंदुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड संयुक्त तत्वाधान गेहूँ पर केचुआ खाद का प्रभाव का प्रदर्शन डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय वि.व.वि.-मृदा विज्ञान द्वारा 04 कृषकों के 1.3 हे. क्षेत्रफल में एच. डी. 2967 प्रजाति का किया गया। जिसमे केचुआ खाद के साथ डी.ए.पी. उर्वरक की विभिन्न मात्रा का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया ।



- ❖ नयागांव एवं काजीपुर में कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर किसानो को फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए सलाह दिया गया ।



कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ केन्द्र पर दिनांक 01 मार्च 2021 को हिल इंडिया लि. द्वारा वित्तपोषित एवं महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रायोजित कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में विभिन्न विकास खण्डों से 350 से अधिक कृषकों ने प्रतिभाग किया एवं कृषि वैज्ञानिकों से कृषकों ने संवाद किया।



❖ 02 मार्च 2021 को जंगल कौड़िया, क्षेत्र के सिंघोरवा में कृषक उत्पादन संगठन विषय पर प्रशिक्षण दिया गया।



❖ 09 मार्च 2021 को जंगल कौड़िया, क्षेत्र के भवनबारी में पशु प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण दिया गया

❖ 08 मार्च 2021 को केंद्र के गृह वैज्ञानिक श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा केंद्र के प्रशिक्षण हॉल में “अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस” पर एकदिवसीय गोष्ठी का आयोजन कराया गया।



❖ 22 मार्च 2021 को केंद्र के गृह वैज्ञानिक श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा केंद्र के प्रशिक्षण हॉल में “विश्व जल दिवस” पर एकदिवसीय गोष्ठी का आयोजन कराया गया।



❖ महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र एवं भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 21.03.2021 को “गेहूं का उन्नत बीज उत्पादन एवं नवीन प्रजातियों का अंगीकरण” विषय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जी. पी. सिंह, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. योगेन्द्र यादव, क्षेत्रीय प्रबंधक, राष्ट्रीय बीज निगम गोरखपुर, डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह, फ़सल सुधार, डॉ. अमित शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. सी.एन. मिश्र, वैज्ञानिक, भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल एवं डॉ. वैभव सिंह, वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली इत्यादि सहित कुल 112 कृषकों ने प्रतिभाग किया।



किसान मेला एवं गोष्ठी

❖ कृषि विभाग, गोरखपुर द्वारा दिनांक 10-03-2021 को कैम्पियरगंज विकास खंड के इन्दरपुर गाँव में आयोजित किसान गोष्ठी में केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा “एकीकृत फसल प्रणाली” विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर कैम्पियरगंज विकास खंड के कुल 75 से भी ज्यादा किसानों ने प्रतिभाग किया।



❖ केंद्र की गृह वैज्ञानिक श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा दिनांक 12 मार्च 2021 को भट्टहट ब्लाक के रघुनाथपुर गाव में “गोबर से जैविक खाद बनाने की विधि” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



प्रक्षेत्र दिवस

❖ दिनांक-16.03.2020 को केंद्र के सस्य विज्ञान विशेषज्ञ, श्री अवनीश कुमार सिंह द्वारा ग्राम-काजीपुर एवं कुशहरा के विकास खण्ड- जंगल कौड़िया में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिसमे 48 कृषकों ने प्रतिभाग किया।



❖ दिनांक-24.03.2020 को केंद्र के सस्य विज्ञान विशेषज्ञ, श्री अवनीश कुमार सिंह एवं प्रयोगशाला सहायक, श्री जीतेन्द्र कुमार सिंह द्वारा ग्राम- इंद्रपुर, विकास खण्ड - कैम्पियरगंज में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिसमे 26 कृषकों ने प्रतिभाग किया।



❖ दिनांक-16.03.2020 को केंद्र के पशुपालन विशेषज्ञ, डॉ. विवेक प्रताप सिंह द्वारा ग्राम-काजीपुर विकास खण्ड - जंगल कौड़िया में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिसमे 22 कृषकों ने प्रतिभाग किया।



महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र एवं भा.कृ.अनु.प.- भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 21.03.2021 को “गेहूँ का उन्नत बीज उत्पादन तकनीकी एवं नवीन प्रजातियों का अंगीकरण” विषय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र को भा.कृ.अनु.प.- भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक, डॉ जी. पी. सिंह जी द्वारा प्रदर्शनों में महत्वपूर्ण योगदान और भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल की उन्नत गेहूं किस्मों का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।



महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र एवं भा.कृ.अनु.प.- भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 21.03.2021 को “गेहूँ का उन्नत बीज उत्पादन तकनीकी एवं नवीन प्रजातियों का अंगीकरण” विषय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ – सस्य विज्ञान, श्री अवनीश कुमार सिंह को भा.कृ.अनु.प.- भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक, डॉ जी. पी. सिंह जी द्वारा प्रदर्शनों में महत्वपूर्ण योगदान और भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल की उन्नत गेहूं किस्मों का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।



अभिनव पहल: महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र पर क्राप कैफेटेरिया

क्राप कैफेटेरिया प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और मूल्यांकन की प्रक्रिया में सूत्रधार की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किसानों, ग्रामीण युवाओं, छात्रों और विस्तार अधिकारियों को तकनीकी ज्ञान का प्रसार करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी के साथ-साथ ‘कर के सिखिए और देख के विश्वास करिये’ के विचारों के आधार पर व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है। कृषि विज्ञान केंद्र चौकमाफी के विषय वस्तु विशेषज्ञ – सस्य विज्ञान, श्री अवनीश कुमार सिंह ने क्राप कैफेटेरिया के माध्यम से कृषक समुदायों के बीच उत्पादन तकनीक के लिए गेहूं, चना, सरसों, मसूर, मक्का और जौ का मूल्यांकन और लोकप्रिय बनाने के लिए एक अभिनव पहल किया है। गेहूं की बारह किस्में (HD 3237, HD 2985, HD 3043, HD 3118, HD 3271, HD 3086, HD 2967, PBW 725, DBW 154, PBW 343, DBW 187, DBW 252), सरसों की दस किस्में (PM 30, PM 31, PM 27, PM 26, PM 25, PM 28, P. Jagarnath, P. Mahak, P. Vijay, MJ 11, मसूर की दो किस्में (L 4727, L4717), चने की नौ किस्में (Pusa 362, Pusa 3062, Pusa 3043, Pusa 372, Pusa 3022, Pusa 547, Pusa 72, RVG 202, RVG 202, मक्का की चार किस्में MM9440, MM9488, 9441, 9443, और विभिन्न प्रकार की रबी फसलें बोई गई हैं। क्राप कैफेटेरिया कृषि समुदायों और विस्तार के अधिकारियों के दृष्टिकोण, कौशल और ज्ञान को बदल रहा है।

कृषक उत्पादक संगठन का निर्माण

कृषक उत्पादक संगठन का निर्माण कराया गया जिसमें से एक “नयागांव लाइवस्टॉक एंड एग्रीकल्चर प्रोड्यूसर कंपनी लि.” एवं दूसरा “श्री गोरखनाथ फार्मर्स मल्टी प्रोड्यूसर कंपनी लि.” का निर्माण कराया गया जिसमें शेयर होल्डर्स जोड़ने का कार्य किया जा रहा है।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र पर आयोजित किसान गोष्ठी/मेला



मधुमक्खी पालन इकाई: एक नजर में



फसलोत्पादन एवं प्रबंधन

मूँग/ उर्द

- ❖ ग्रीष्मकालीन उर्द की बुवाई का समय बीत चुका है। मूँग की बुवाई 10 अप्रैल तक की जा सकती है
- ❖ बीज की मात्रा 10-12 किग्रा/एकड़ रखें।
- ❖ बुवाई के समय फफूंदनाशक दवा से 2 ग्राम/कि.ग्रा. की दर से बीजों को शोधित करें। इसके अलावा राइजोबियम और पी.एस.बी. कल्चर से (250 ग्राम) बीज शोधन अवश्य करें। 10-12 किलोग्राम बीज के लिए यह पर्याप्त है।
- ❖ पहली सिंचाई 20-25 दिनों में करें। इसके बाद 10-12 दिनों के अंतराल में सिंचाई करें। इस प्रकार कुल 2 से 3 सिंचाई करें। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि, फूल आने की अवस्था तथा फलियां बनने पर सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।

गेहूँ

- ❖ गेहूँ काटने से पहले खरपतवार या गेहूँ की अन्य प्रजातियों की बालियों को निकल देना चाहिए, जिससे मडई के समय के समय इनके बीज गेहूँ के बीज में न मिलने पायें।

जौ/चना/मटर/ मसूर/ सरसों :-

- ❖ इन फसलों की कटाई एवं मडाई का कार्य पूरा कर ले

मृदा विज्ञान

- ❖ गन्ना, आलू व राई के खेत में मूँग की बुवाई 10 अप्रैल तक की जा सकती है। इनमें पोषक तत्वों की मात्रा 20:60:40::N:P:K किग्रा/हे. के अनुपात में उपयोग किया जाना चाहिए।
- ❖ कद्दुवर्गीय सब्जियों का भी यह उपयुक्त समय है। इनमें पोषक तत्वों की मात्रा 60:40:40::N:P: K किग्रा/हे. के अनुपात में उपयोग किया जाना चाहिए।
- ❖ हल्दी की बुवाई के लिए अपने खेत को तैयार कर लें एवं बीज की व्यवस्था कर ले। हल्दी की बुवाई हेतु प्रति हेक्टेयर लिए 15 से 20 कुंतल बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई से पूर्व प्रकंदों को एगलाल या एग्रोसान के घोल से उपचारित कर लेना चाहिए। पंक्तियों से पंक्ति की दूरी 45-50 सेंटीमीटर तथा बीज से बीज की दूरी 20-25 सेंटीमीटर रखी जानी चाहिए।।
- ❖ सूरन की खेती के लिए अपने खेत को तैयार कर लें एवं बीज की व्यवस्था कर ले। सूरन की बुवाई हेतु प्रति हेक्टेयर 75 कुंतल बीज की आवश्यकता होती है। खाद एवं उर्वरक की मात्रा मृदा जांच के आधार पर करनी चाहिए परंतु मृदा जांच ना होने की अवस्था में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश तत्वों की 80 kg:60 kg :100 kg प्रति हेक्टेयर की दर से उर्वरक के रूप में तथा 20 से 25 टन सड़ी गोबर की खाद देनी चाहिए। खाद एवं उर्वरक को खेत में ना छिटककर गड्ढों में ही डालना उत्तम रहता है प्रति गड्ढे के हिसाब से कंपोस्ट या गोबर की खाद 2 किलोग्राम, यूरिया 10 ग्राम, सिंगल सुपर फास्फेट 29 ग्राम, म्यूरेट ऑफ पोटाश 16 ग्राम तथा ब्लीचिंग पाउडर एक चम्मच, मिट्टी में मिलाकर गड्ढे को भर देना चाहिए।

मौनपालन

- ❖ लीची, सहजन एवं बरसीम में फूल खिलने के दशा में प्रक्षेत्र का चयन कर, ,मौनवंशों का समय से माईग्रेशन करें
- ❖ मौनगृह के तलपट पर सम्बंधित उपकरणों को पोटैशियम परमैंगनेट/ लाल दवा से एक बार धुलाई करें
- ❖ माइट के प्रकोप से बचने के लिए मौनगृह के तलपट की समय-समय पर सफाई करते रहें
- ❖ अत्यधिक पुराने एवं काले पड़ चुके छत्तों को नष्ट कर दें तथा उनकी प्रतिपूर्ति मोमी छात्ताधर लगाकर नए छत्तों का निर्माण कराकर कर लिया जाए ताकि मौनवंशों की गुणवत्ता प्रभावित न हो

- ❖ गतवर्ष की अधिक शहद उत्पादन करने वाले सशक्त मौनवंशों को मात्र मौनवंश की श्रेणी में रखते हुए इनसे मौनवंशों का संवर्धन सुनिश्चित किया जाए

पशुपालन

- ❖ पशुओं के मुँह में छाले पड़ने पर सुहागा के चूर्ण को पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए या फिर पोटेश को ठंडे पानी में मिलाकर मुँह की सफाई करनी चाहिए | ग्लिसरीन और बोरिक एसिड का पेस्ट बनाकर जीभ के ऊपर छालों पर लगानी चाहिए | मुँह को खोल कर मुँह के अंदर तथा जीभ पर मक्खन लगाने से आराम महसूस होता है | ऊपर लिखे सारे उपचार को दिन में तीन से चार बार परिस्थिति के अनुरूप दोहराते रहना चाहिए |
- ❖ थन कटना: थन कटने पर सबसे पहले उसे साफ़ पानी से धोकर उसके ऊपर एंटीसेप्टिक क्रीम का उपयोग करना चाहिए | अगर क्रीम नहीं हो तो पोटेश के पानी से धोकर फिटकिरी पीस कर लगाना चाहिए | दूध दोहने के पहले थन को पानी से धोना चाहिए और दोहने के उपरान्त नारियल तेल या सरसों तेल लगाना चाहिए |
- ❖ जायद के हरे चारे की बुआई करें, बरसीम चारा बीज उत्पादन हेतु कटाई कार्य करें।
- ❖ दुधारू पशुओं के लिये उनके आहार प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें
- ❖ बरसीम का बीज तैयार करें |
- ❖ अन्तः एवं बाह्य परजीवी का बचाव करने के लिए पशुओं को पानी में दवा मिलाकर नहलाएं और दवा पिलाएं |

सब्जियों की खेती

- ❖ ग्रीष्म कालीन सब्जियों जैसे लोबिया, भिन्डी, लौकी, खीरा, खरबूजा, तरबूज, नेनुआ, आदि की बुवाई यदि न की हो तो पूरी कर ले |
- ❖ ग्रीष्म कालीन सब्जियों, जिनकी बोआई फ़रवरी माह में कर ली गई थी, उन फसलो की हर सातवे दिन के अंतर पर सिचाई करते रहे तथा आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करें |
- ❖ लहसुन की फसल में खुदाई के 10-12 दिन पूर्व सिचाई बंद कर दे |
- ❖ प्रति हेक्टेअर अदरक की 18-20 कुंतल, हल्दी की 15 -20 कुंतल व् सुरन की 75 कुंतल बीज की आवश्यकता होती है |

फलों की खेती

- ❖ आम फलों को गिरने से रोकने के लिए नेप्थालिन एसिटिक एसिड (20 पी.पी. एम.) 2 ग्राम प्रति 100 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए |
- ❖ गुम्मा व्याधि ग्रसित बौर को हटा देना चाहिए |
- ❖ यदि बाग ईंट के भट्टे के पास हो तो निदान हेतु बोरेक्स (1%) का छिड़काव अंतिम सप्ताह में करे |
- ❖ आम में भुंगगा कीट से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफास (1.0 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) घोलकर छिड़काव करे |
- ❖ लीची के बागो की आवश्यकतानुसार सिचाई करते रहे |
- ❖ लीची में फ्रूट बोरर की रोकथाम हेतु डाईक्लोरोवास आधा मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे |

फूलो की खेती

- ❖ गर्मी वाले मौसमी फूलो जैसे पोर्चुलाका, जीनिया, सुन्फ्लोवर, कोचिया, नारंगी, गोमफ्रिना आदि के पौधों की आवश्यकतानुसार सिचाई करें |

सहयोग			
नाम	पदनाम	विषय	मो0न0
श्री आशीष कुमार सिंह	प्रक्षेत्र प्रबंधक	अनुवाशिकी एवं पादप प्रजनन	07752941868
श्री जितेन्द्र कुमार सिंह	कार्यक्रम सहायक (लैब टेक्निशियन)	पौध संरक्षण	08887725608
श्री शुभम पाण्डेय	सहायक	-	08317019891

सह-सम्पादक मंडल			
डा0 विवेक प्रताप सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	पशुपालन	07651922058
डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव	विषय वस्तु विशेषज्ञ	उद्यान	08787264166
डा0 राहुल कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	कृषि प्रसार	07007275688
श्री अवनीश कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	सस्य विज्ञान	09792099943
श्री संदीप प्रकाश उपाध्याय	विषय वस्तु विशेषज्ञ	मृदा विज्ञान	09621437547
श्रीमती श्वेता सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	गृह विज्ञान	09453158193

संकलन एवं सहयोग			
नाम	पदनाम	विषय	मो0न0
श्री गौरव कुमार सिंह	कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)	कम्प्यूटर	07651922058

सम्पादक			
डा0 संदीप कुमार सिंह			
(वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष)			
महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर(उ०प्र०)			
Mob no. 09453721026; Email – gorakhpurkvk2@gmail.com			
website - http://www.mgkvk.in/			